707

हिन्दी साहित्य

टेस्ट-8

(प्रश्न पत्र-II)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

DTVF / OPT-24 HL-2408

निर्धारित समय: तीन घंटे Time Allowed: Three Hours	अधिकतम अंक : 250 Maximum Marks : 250

नाम (Name): Payal Gwalwanshi

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.): ____________________

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 08, 16 Aug. 2024

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2024] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2024]:

0	8	2	2	5	9	1

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ____________________ टिप्पणी (Remarks): ____________________

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

दृष्टि The Vision

Feedback

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

दृष्टि The Vision

खण्ड - क

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

1. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये:

10 × 5 = 50

(क) दुनिया में यह सब तो चलता ही रहता है, तुम अकेली कहाँ तक लड़ोगी?..... किसी चीज से अगर सचमुच प्यार हो या वह कीमती हो तो टूट-फूट जाने पर भी उसका मोह नहीं जाता।

संदर्भ- प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी साहित्य के नई कहानियों के संग्रह एक दुनिया समानान्तर (राजेन्द्र यादव) की कहानी सामान का है जिसके लेखक प्रयाग शुक्ल है।

प्रसंग - सामान कहानी का नायक अपनी पत्नी से कहता है।

व्याख्या - सामान कहानी में नायक अपनी पत्नी से कहता है कि दुनिया में ये सब चलता रहता है परन्तु तुम कब तक अपने आप को इन सबमें उलझाए रखोगी। मानाकि किसी से अत्याधिक लगाव हो जाए तो उसके टूटने-फूटने या गुम हो जाने पर बुरा तो लगता है और हमेशा ही वह वस्तु हमें याद

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

आती रहती है।

विशेष

1) ~~प्रश्न~~ प्रयागशुक्ल द्वारा किसी व्यक्ति के स्वयं वस्तु बन जाने की बात की गई है।

2) अस्तित्वादी दर्शन का प्रभाव

3) किसी विषय के बारे में अत्यधिक चिंतन से उसके अत्यधिक महत्वपूर्ण बनने के विषय में बात

4) भाषा सरल और सहज है।

5) प्रश्नात्मक शैली का प्रयोग

6) प्रतीक चिन्हों का यथास्थान प्रयोग

7) प्रतीकों का प्रयोग

दृष्टि
The Vision

(ख) इस नयी सभ्यता का आधार धन है। विद्या और सेवा और कुल और जाति सब धन के सामने हेय हैं। कभी-कभी इतिहास में ऐसे अवसर आ जाते हैं, जब धन को आन्दोलन के सामने नीचा देखना पड़ता है, मगर इसे अपवाद समझिये। मैं अपनी ही बात कहती हूँ। कोई गरीब औरत दवाखाने में आ जाती है, तो घण्टों उससे बोलती तक नहीं, पर कोई महिला कार पर आ गयी, तो द्वार तक जाकर उसका स्वागत करती हूँ। और उसकी ऐसी उपासना करती हूँ, मानो साक्षात् देवी है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी साहित्य की उपन्यासधारा के महान उपन्यास गोदान से लिया गया है जिसके लेखक मुंशी प्रेमचंद है।

प्रसंग - यह कथन मिस मालती का है जिसमें उन्होंने पूंजीवाद के विषय में कहा है।

व्याख्या - मिस मालती कहती है नई पूंजीवादी सभ्यता का आधार धन है। इसके सामने विद्या, सेवा, कुल, जाति सब छोटे है कुछ अपवाद ही है जहाँ धन का महत्व कम रहा हो नहीं तो सर्वत्र धन की महत्ता बनी हुई है। मेरा ही उदाहरण लिजिये यदि कोई गरीब महिला आ जाये तो मेरा ध्यान उस पर नहीं जाता वही अमीर के आने पर मैं उसका

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

स्वागत करती हूँ। उसका धन बल मुझे आकर्षित करता है। और इससे प्रभावित होकर मैं उसे अधिक महत्व देने लगती हूँ।

विशेष

1) प्रेमचंद ने सामंतवादी व्यवस्था के स्थान पर शोषण की नई पद्धति पूंजीवादी व्यवस्था को उजागर किया है।

2) पूंजीवादी व्यवस्था के धन और मांग के नियम पर प्रकाश

3) सीधी-सरल हिन्दुस्तानी खड़ी बोली

4) तत्समी शब्दों का प्रयोग

उदा० सभ्यता, स्वागत

5) चेतनाप्रवाह शैली

(ग) कला केवल उपकरण मात्र है, कला जीवन के लिये और उसकी पूर्ति में ही है। जीवन से विरक्ति और जीवन के उपकरण से अनुराग का क्या अर्थ?... किसी का जीवन अन्य की तृप्ति और जीवन की पूर्ति का साधन मात्र होकर रह जाय? वह जीवन सृष्टि में अपनी सार्थकता से सृष्टि में नारी के जीवन की मौलिक सार्थकता से वंचित रह जाय? जैसे सेवा के साधन दास का जीवन!...भयंकर प्रवंचना!

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी साहित्य की उपन्यासधारा के नारी चेतना आधारित उपन्यास दिव्या से है जिसके लेखक प्रगतिवादी विचारधारा के यशपाल है।

प्रसंग - मारीश द्वारा यह वाक्य दिव्या से कहा गया है।

व्याख्या - मारीश कहता है कि कला मात्र एक उपकरण है यह जीवन की पूर्ति का एक साधन मात्र है। अत: इसके कारण जीवन से विरक्ति और कलारूपी उपकरण से इतना प्रेम और लगाव अनावश्यक है। हमारा जीवन किसी और की तृप्ति का साधन बन जाये ऐसा जीवन सार्थकता को प्राप्त नहीं कर सकता है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

ऐसा जीवन गुलामी का जीवन होता है। किसी और की अधीनता स्वीकार करना पराधीनता है।

विशेष

1) यशपाल द्वारा मारीशा के माध्यम से अपने मार्क्सवादी विचारों का प्रक्षेपण

2) मार्क्सवाद में शोषण और सामाजिक असमानता के विरुद्ध आवाज़

4) कला को केवल बाहरी उपकरण माना

5) भाषा सीधी-सरल
कहीं-कहीं तत्सम शब्द; परिवेश की माँग के अनुसार
उदा० - प्रवंचना

6) कथ्य को महत्व न कि शिल्प को

7) प्रश्न चिन्हों का प्रयोग

(घ) कविता केवल वस्तुओं के रूप-रंग में सौंदर्य की छटा नहीं दिखाती, प्रत्युत कर्म और मनोवृत्ति के भी अत्यंत मार्मिक दृश्य सामने रखती है। वह जिस प्रकार विकसित कमल, रमणी के मुखमंडल आदि के सौंदर्य मन में लाती है, उसी प्रकार उदारता, वीरता, त्याग, दया, प्रेमोत्कर्ष इत्यादि कर्मों और मनोवृत्तियों का सौंदर्य भी मन में जमाती है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी साहित्य के महान निबंधकार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के कविता क्या है? निबंध से लिया गया है।

प्रसंग - शुक्ल जी द्वारा कविता के जीवन में महत्व को दर्शाया गया है।

व्याख्या - शुक्ल जी कविता के विषय में कहते हैं कि कविता केवल वस्तुओं के रूप-रंग में सौन्दर्य को ही नहीं दर्शाती अपितु कर्म और मन के विचारों के अत्यंत मार्मिक दृश्यों को भी उद्घाटित करती है। यह जिस प्रकार सुंदर दृश्यों को मन में लाती है उसी प्रकार उदारता, वीरता, त्याग, दया, प्रेम जैसे मूल्यों, कर्मों और मनोविचारों के

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

सौन्दर्य को भी मन में लाती है। अतः कविता का महत्व बहुआयामी है।

विशेष

1) 'कविता क्या है' निबंध शुक्ल जी का महान विचारात्मक शैली का निबंध है।

2) इसमें कविता के महत्व को उजागर किया गया है।

3) कविता के सौन्दर्य के पहचानने के साथ कर्मों और मनोविचारों की सुंदरता दर्शाने में महत्व

4) भाषा सरल-सहज है।
तत्सम शब्द - उदारता, सौन्दर्य

5) सूत्र शैली

6) चेतना प्रवाह शैली के कारण काव्यात्मकता।

(ङ) अब वह यह मानने को तैयार है कि आदमी का दिल होता है, शरीर को चीर-फाड़कर जिसे हम नहीं पा सकते हैं। वह 'हार्ट' नहीं वह अगम अगोचर जैसी चीज है, जिसमें दर्द होता है, लेकिन जिसकी दवा 'ऐड्रिलिन' नहीं। उस दर्द को मिटा दो, आदमी जानवर हो जाएगा। ... दिल वह मंदिर है जिसमें आदमी के अंदर का देवता बास करता है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ- प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी साहित्य के महान कहानी संग्रह एक दुनिया समानांतर से है। इसके अंतर्गत मार्कण्डेय की हंसा जाई अकेला कहानी से ली गई है।

प्रसंग- मार्कण्डेय द्वारा मैं शैली का प्रयोग कर नायक के विचारों का प्रस्तुतीकरण किया गया है।

व्याख्या- नायक कहता है कि इसे विश्वास हो गया है कि आदमी के अंदर दिल होता है जिसे चीर-फाड़कर नहीं निकाला जा सकता है। दिल कोई भौतिक वस्तु नहीं अपितु अगम-अगोचर अलौकिक वस्तु है। जिसे किसी दवा से ठीक नहीं किया जा सकता है। यदि इसमें जो दर्द है जो भावनाएँ है इसे हटा दिया जाये तो आदमी

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

जानवर बन जायेगा। अतः दिल ही मानवता का प्रतीक है। दिल ही वह स्थान है जहाँ देवता निवास करते है।

विशेष

1) मार्कण्डेय द्वारा इस कहानी में मनुष्य के जीवन में भावनाओं के महत्व को दर्शाया गया

2) भावनारहित इंसान जानवर तुल्य होता है।

3) भाषा सीधी-सरल, सहज है।

4) चेतना प्रवाह शैली

5) मैं शैली का प्रयोग

6) प्रतीक चिन्हों का यथास्थान प्रयोग।

2. (क) 'गोदान' उपन्यास के 'होरी' और 'गोबर' की तुलना करते हुए बताइए कि आपके मत में इनमें से कौन संभावनाशील चरित्र है? 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

1936 में लिखा गया गोदान उपन्यास मुंशी प्रेमचंद का पूर्णतः यथार्थवादी विचारों से युक्त उपन्यास है। प्रगतिवादी लेखक संघ की अध्यक्षता करने के कारण प्रेमचंद पर मार्क्सवादी विचारों का प्रभाव भी गोदान में स्पष्ट दिखायी देता है।

चूंकि यह समय विचारधाराओं के संक्रमण का युग है जहाँ एक ओर सामंतवाद का पतन हो रहा है दूसरी ओर पूंजीवाद का उदय हो रहा है। इन्हीं विचारों के प्रतीक होरी और गोबर में पीढ़ीगत और विचारगत संघर्ष सम्पूर्ण उपन्यास में दिखाई देता है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

होरी और गोबर की तुलना

1) होरी पर सामंतवादी मूल्यों जैसे - धर्म, बिरादरी, मर्यादा, संयुक्त परिवार, जाति व्यवस्था का प्रभाव है।

वहीं दूसरी ओर गोबर पर पूंजीवाद, औद्योगीकरण, धन, समानता, न्याय आदि मूल्यों का प्रभाव है।

2) होरी यथास्थितिवादी मानसिकता वाला किसान है तो वहीं दूसरी ओर गोबर विद्रोही विचारों वाला नवयुवक है।

होरी - भगवान ने जब गुलाम बना ही दिया तो अपना क्या बस है।

गोबर - गोबर साँवला, लम्बा, एकहरा युवक है। जिसके मुख पर सदैव अप्रसन्नता और विद्रोह दिखाई देता है।

दृष्टि The Vision

3) होरी धर्म, ऊँच-नीच आदि को ईश्वरनिर्मित मानता है जबकि गोबर इसे ऊँचे वर्ग के लोगों द्वारा शोषण का साधन मानता है।

होरी - हम सब बिरादरी के चाकर हैं इसके बाहर नहीं जा सकते।

गोबर - रुपये हो तो हुक्का-पानी कोई नहीं पूछता है। पैसा है तो सब है।

5) होरी किसानी को मर्यादा का काम समझता है जबकि गोबर शोषण आधारित खेती के स्थान पर मजदूरी को महत्व देता है।

होरी - जो दस रुपये महीने का नौकर है वह भी हमसे अच्छा खाता है पर खेती छोड़ी भी तो नहीं जाती इसमें मरजाद है।

6) होरी संयुक्त परिवार पर विश्वास रखता है जबकि गोबर एकल परिवार पर

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

गोबर - खबरदार जो किसी ने झुनिया पर हाथ उठाया था वरना आज यहाँ महाभारत हो जायेगा।

होरी और गोबर में कौन संभावनाशील है

होरी का चरित्र अपनी बनी बनाई शोषण आधारित व्यवस्था से बाहर नहीं निकलना चाहता है जबकि गोबर इस व्यवस्था से बाहर निकलकर नई व्यवस्था का हिस्सा बनने हेतु कदम उठाता है।

रामविलास शर्मा का कथन

"होरी और गोबर की बातचीत एक पिछड़े किसान और एक आगे बढ़ चुके और अपने अधिकारों को पहचानने वाले किसान के बीच की टक्कर है।

अतः गोबर वह चरित्र है जिसमें अपनी स्थिति से बाहर निकलकर अधिकारों से लड़ने की चेतना नजर आती है।

दृष्टि The Vision

(ख) 'खोई हुई दिशाएँ' कहानी में नई कहानी की विशेषताएँ किस रूप में दिखाई देती हैं? प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

1960 के बाद नई कहानी आंदोलन का आगमन हुआ जिसमें मुख्यत: शहर के मध्यवर्गीय चरित्रों के जीवन आधारित प्रसंगों को कहानी में शामिल किया गया।

राजेन्द्र यादव का महान कहानी संकलन "एक दुनिया समानांतर" में कई यथार्थवादी नई कहानियों को शामिल किया गया।

"खोई हुई दिशाएँ" नामक कहानी कमलेश्वर की रचना है जो नई कहानी की विशेषताओं को समग्रता से धारण करती है।

इसमें शहर में व्यक्ति के अकेलेपन, आत्मनिर्वासन, अजनबीपन जैसे विचारों को बखूबी से चित्रित किया गया है।

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

खोई हुई दिशाएँ : नई कहानी की विशेषताएँ द्वारा

(1) कहानी का मुख्य पात्र चंदर है जिसके माध्यम से शहर के अकेलेपन को दर्शाया गया है। देश की राजधानी में रहते हुए उसके विचार-

"और यह राजधानी! जहाँ सब अपना है, अपने देश का है पर कुछ भी अपना नहीं है, अपने देश का नहीं है।

(2) वह अपनी पत्नी निर्मला से प्यार करना चाहता है परन्तु शहर की जिंदगी ने उसे बहुत थका दिया है अतः इसके कारण स्त्री-पुरुष संबंधों में दूरी बढ़ गई है।

"समूची पहचान और सारा प्यार न जाने कहाँ छुप चुका होगा, अजीब-सा बेगानापन होगा।

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(7) जब वह बस पकड़ने जाता है कंडक्टर द्वारा पहले प्यार से बात करना परन्तु पैसे के मामले में बेरूखी दिखाना, उसे मानवीय मूल्यों के कमजोर होने को दर्शाते है।

"किसे होरने लाए होगाजी प्यार पाने आसी ते है छ: आने ही लेंदे बादशाहो!"

(8) जब वह अपनी पुरानी मित्र इन्द्रा से मिलता है तो उसमें भी उसे परिवर्तन दिखाई देता जो उसे अजनबीपन, पहचान का संकट अहसास दिलाता है।

"जब इन्द्रा ने पूछा कितनी चम्मच चीनी डालता है तो चंदर कुछ कह न सका यह अजनबीपन उसे असहनीय लगा।"

इस प्रकार कमलेश्वर की यह कहानी नई कहानी की संभवत: सभी समस्याओं को समेटते हुए यथार्थवादी चित्रण करती है।

(ग) 'दिव्या' उपन्यास में इतिहास किस रूप में उपस्थित है? विवेचनात्मक उत्तर दीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

दिव्या उपन्यास यशपाल की मार्क्सवादी विचारधारा का सक्षम अंकन करता है। इसमें नारी जीवन की समस्याओं को सम्पूर्णता से समेटने का प्रयास किया गया है।

साथ ही यशपाल की दिव्या अपनी परिस्थितियों के अधीन हार नहीं मानती अपितु स्वतंत्र स्थिति को प्राप्त करती है।

दिव्या का इतिहास बोध

यशपाल ने दिव्या उपन्यास में इतिहास का प्रयोग इतिहास की जानकारी और तथ्यों को दर्शाने नहीं किया अपितु उपयोगितावादी नजरिये से केवल ऐतिहासिक वातावरण होने के नजरिये से किया है।

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

प्राक्कथन में ही यशपाल ने अपने इतिहासबोध के विषय में लिखा है-

"इतिहास विश्वास की नहीं अपितु विश्लेषण की वस्तु है। इतिहास मनुष्य का अपनी परम्परा में आत्मविश्लेषण है।

(1) इतिहासबोध के प्रयोग में मानववादी दृष्टिकोण को अपनाया गया है अतः इतिहास मनुष्य पर थोपा नहीं जाता है अपितु इतिहास परिस्थिति अनुसार नया आयाम धारण कर मनुष्य द्वारा स्वयं बनाया जाता है।

(2) दिव्या में इतिहास केवल वातावरण निर्माण हेतु उपस्थित है।

यदि ऐतिहासिक चरित्रों की बात की जाये तो महर्षि पतंजलि, मिलिंद, मगध के राजा पुष्यमित्र शुंग जैसे पात्रों के

दृष्टि
The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

माध्यम से इतिहास की वास्तविकता का बोध होता है।

ऐतिहासिक स्थलों में मथुरा, सागल, मगध आदि हैं जो वर्तमान में भी उपस्थित हैं जो कला, व्यापार, और सत्ता के केन्द्र माने जाते रहे हैं।

(3) यशपाल का इतिहासबोध मार्क्सवाद के ऐतिहासिक भौतिकवाद को आधार बनाता है। जिसमें इतिहास का प्रयोग केवल वर्तमान को आधार देने हेतु।

(4) यशपाल ने इतिहास का चक्रीय के स्थान पर रैखीक माना है
इतिहास घटनाओं की पुनरावृत्ति नहीं करता अपितु। परिवर्तन का सत्य ही इतिहास का मुख्य तत्व है।

इस प्रकार यशपाल की इतिहास दृष्टि दिव्या को प्रामाणिक बनाने में सहायक है।

3. (क) अज्ञेय के निबंध 'संवत्सर' के प्रतिपाद्य पर प्रकाश डालिए। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ख) 'प्रेमचंद की कहानियों में मनोविज्ञान का सुंदर प्रयोग हुआ है।' आप इस मत से कहाँ तक सहमत हैं? 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ग) उपन्यास-कला की दृष्टि से 'महाभोज' उपन्यास का अवलोकन कीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

4. (क) 'नई कहानी' के भीतर अमरकांत के वैशिष्ट्य को 'ज़िंदगी और जोंक' कहानी के आधार पर लक्षित कीजिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ख) 'भारत-दुर्दशा' नाटक के रचना-उद्देश्य पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ग) 'चिन्तामणि' के निबंधों में प्रौढ़ चिन्तन, सूक्ष्म विश्लेषण और तर्कपूर्ण विवेचन का चरम आदर्श लक्षित होता है। विवेचन कीजिए। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखियेः

10 × 5 = 50

(क) सचमुच कुछ प्रश्नों की सफलता इसी बात में होती है कि हम उस प्रश्न तक पहुँच गये हैं। उस प्रश्न का उत्तर भी हो, इसकी अपेक्षा वहाँ नहीं रहती। दूसरे शब्दों में, ऐसे प्रश्न का सही उत्तर यही होता है कि यह जिज्ञासु भाव लेकर हम जीवन की ओर लौट आयें और उसे जिज्ञासुवत् हो जियें।

संदर्भ- प्रस्तुत गद्यांश महाभोज उपन्यास का है जिसकी लेखिका मन्नू भण्डारी है।

व्याख्या- नायिका द्वारा कहा जाता है कि कुछ प्रश्नों की सफलता इस बात पर होती है हम उसके प्रश्न तक पहुँच गये है। उत्तर की अपेक्षा नहीं होती है। ऐसे प्रश्नों का सही उत्तर यही है कि यह जिज्ञासा को बढ़ावा देना है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

विशेष

1) लेखक द्वारा यान्त्रिकवादी दर्शन
2) यथार्थवाद का प्रयोग
3) भाषा - सरल - सहज

दृष्टि
The Vision

(ख) जीवन में एक समय प्रयत्न की असफलता मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन नहीं है। जीवन का हम अन्त नहीं देख पाते, वह निस्सीम है। वैसे ही मनुष्य का प्रयत्न और चेष्टा भी सीमित क्यों हो? असामर्थ्य स्वीकार करने का अर्थ है, जीवन में प्रयत्नहीन हो जाना, जीवन से उपराम हो जाना।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ- प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी साहित्य के महान नाटककार जयशंकर प्रसाद के स्कंदगुप्त नाटक से लिया गया

प्रसंग- देवसेना द्वारा स्कन्दगुप्त से कहा गया है।

व्याख्या- देवसेना हूणों के आक्रमण के दौरान स्कंदगुप्त से कहती है कि

जीवन में एक बार असफलता सम्पूर्ण जीवन नहीं है। अपितु जीवन तो अनवरत चलता रहता है। उसी प्रकार हमारी प्रयत्न की सीमाएँ भी असीमित है हमें प्रयत्न करना नहीं छोड़ना चाहिये। असफलता और स्वयं को सामर्थ्यहीन समझना ही सबसे बड़ी गलती है। अप्रयत्नहीन होना, जीवन

को विराम की अवस्था पर पहुंचा देना है।

विशेष

1) जयशंकर प्रसाद पर छायावादी विचारधारा का प्रभाव स्पष्ट है।

2) जीवन की चिरंतरता का विचार।

3) उत्साह और प्रयत्नशील होने के प्रेरणा

4) भाषा - सीधी - सरल है।
तत्सम शब्दावली प्रसंगानुसार है।
उदा० - असामर्थ्य
अप्रयत्नशील

5) प्रतीकों का यथास्थान प्रयोग

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(ग) हमने एक दूसरा उपाय सोचा है, एडूकेशन की एक सेना बनाई जाय। कमेटी की फौज। अखबारों के शस्त्र और स्पीचों के गोले मारे जायँ। आप लोग क्या कहते हैं?

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ- प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी साहित्य के महान नाटककार भारतेंदु हरिश्चंद्र के भारत दुर्दशा नाटक से लिया गया है।

प्रसंग - यह वाक्य भारत दुर्दशा के एक पात्र पहला देशी द्वारा कहा गया है।

व्याख्या - भारतेंदु हरिश्चंद्र वर्तमान भारत की समस्यायों को सुलझाने हेतु उपाय बता रहे है। जिसमें शिक्षा को मुख्य केन्द्र मे रखे जाने की योजना है। समितियों का निर्माण किया जाये। अखबारों से राष्ट्रीय चेतना का प्रसार हो, उत्साहवर्द्धक भाषणों से लोगों को जागरूक किया जाये। यही उपाय है जिनसे देश की दुर्दशा को समाप्त किया जा सकता है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

विशेष

1) भारतेंदु द्वारा भारत की वर्तमान की अराजकता और समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है।

2) शिक्षा, अखबार जैसे माध्यमों द्वारा लोगों को जागरूक करने का विचार

3) नवजागरण और राष्ट्रीय चेतना से परिपूर्ण

4) भाषा - सीधी - सरल

5) नाटकीय संवादों का प्रयोग

6) चरित्र - प्रतीकों के रूप में

दृष्टि
The Vision

(घ) तुम्हारे दुख की बात भी जानती हूँ। फिर भी मुझे अपराध का अनुभव नहीं होता। मैंने भावना में एक भावना का वरण किया है। मेरे लिये वह संबंध और सब संबंधों से बड़ा है। मैं वास्तव में अपनी भावना से प्रेम करती हूँ जो पवित्र है, कोमल है, अनश्वर है...।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

संदर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी साहित्य के महान अस्तित्ववादी नाटककार मोहन राकेश के नाटक ~~आषाढ़ का एक दिन~~ से लिया गया है।

यह जयशंकर प्रसाद के स्कंदगुप्त नाटक से है।

प्रसंग - देवसेना द्वारा स्कंदगुप्त को कहा गया है।

व्याख्या - देवसेना कहती है कि स्कंदगुप्त के दुख को वह जानती है परन्तु वह उसके प्रेम को नहीं स्वीकारती इसमें उसे कोई अपराध भी नहीं लगता है। क्योंकि उसके अपनी भावनाओं पर

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

जीत हासिल कर ली है। वह वास्तव में अपनी भावनाओं से प्रेम करती है जो पवित्र और कोमल है।

विशेष

1) भाषा तत्सभी है, प्रसंगानुसार साथ ही सरल-सहज खड़ी बोली

2) छायावादी दर्शन
- नारी द्वारा त्याग की भावना
- प्रेम को सर्वोत्तम मूल्य मानना

3) नायिका द्वारा दर्शन का प्रक्षेपण

दृष्टि The Vision

(ङ) सुख और दुख अन्योन्याश्रय हैं। उनका अस्तित्व केवल विचार और अनुभूति के विश्वास में है। इच्छा ही सर्वावस्था में दुख का मूल है। एक इच्छा की पूर्ति दूसरी इच्छा को जन्म देती है। वास्तविक सुख इच्छा की पूर्ति में नहीं, इच्छा से निवृत्ति में है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ - प्रस्तुत गंद्यांश हिन्दी साहित्य के महान प्रगतिवादी विन्याइधारा के उपन्यासकार यशपाल के नारीचेतना पर आधारित दिव्या उपन्यास का है।

प्रसंग - मारीश के माध्यम से इच्छा को दुःख का कारण माना गया है। मारीश द्वारा दिव्या को कहा गया है।

व्याख्या - मारीश दिव्या को समझाता है कि सुख और दुख अन्योन्याश्रय है। अतः दोनों ही क्षणिक अनुभव है वे केवल विचार और अनुभूति के स्तर में है। और इच्छा ही दुःख को जन्म देती है। एक इच्छा दूसरी इच्छा को जन्म देती है। और इस प्रकार इच्छाओं का कभी अंत नहीं होता है।

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

यदि सुख चाहते हो तो इच्छा की शर्तें को उद्देश्य बनाने के स्थान पर इच्छा से मुक्ति को उद्देश्य बनाओ।

विशेष

1) यशपाल द्वारा चार्वाक दर्शन के साथ ही बौद्ध दर्शन का प्रयोग

2) इच्छाओं को दुःख का मूल कारण माना है।

3) मार्क्सवाद का भी प्रभाव

4) सीधी-सरल सहज भाषा

5) तत्समशब्दावली - अन्योन्याश्रय अस्तित्व

6) सूत्र शैली का प्रयोग

6. (क) प्रेमचंद द्वारा गोदान में शहरी कथा के समावेश के क्या कारण हो सकते हैं? संभावित कारणों में कौन-सा कारण आपको सर्वाधिक प्रबल प्रतीत होता है? 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

प्रेमचंद द्वारा लिखा गया उपन्यास गोदान को महाकाव्यात्मक उपन्यास की संज्ञा दी जाती है। अतः महाकाव्यात्मक उपन्यास की यह विशेषता होती है कि वह समकालीन सभी समस्याओं, वर्गों, समूहों, संस्कृतियों, विचारों का अपने कथानक में शामिल करने का प्रयास करता है।

प्रेमचंद के गोदान पर सामान्यतः आक्षेप किया जाता है कि यह दोहरा कथानक को सम्प्रेषित करता है। जो इसकी कथावस्तु को कमजोर बनाता है।

इससे पहले भी प्रेमचंद ने निर्मला, सेवासदन, रंगभूमि आदि उपन्यासों में शहरी कथा का समावेशन किया था।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

प्रेमचंद द्वारा शहरी कथा के समावेश के कारण

प्रेमचंद द्वारा गोदान में केवल तीन पात्रों- रायसाहब, मेहता-मालती, मिर्जा खुर्शेद द्वारा शहरी कथा को लाया गया है और केवल तीन प्रसंग ही शहरी कथा को दर्शाते हैं - धनुष प्रसंग, कबड्डी का खेल आयोजन, गोबर द्वारा शहर जाना

समावेशन के कारण

① प्रेमचंद एक महाकाव्यात्मक उपन्यास लिख रहे थे जिसमें गाँव के साथ-साथ शहर का वर्णन करना भी आवश्यक था।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(२) मिलवर्ग का शोषण सिर्फ ग्रामीण क्षेत्र में ही नहीं अपितु शहरी क्षेत्र में भी होता है।
उदा० कारखानों में कम वेतन, कार्य की कमजोर परिस्थितियाँ

(३) संक्रमण के युग को दर्शाना चाहते थे किस प्रकार कृषि व्यवस्था के जीवन निर्वाह में सफल न होने के कारण अन्य रोजगार की विकल्प हेतु प्रवासन।

(४) साथ ही शहरी क्षेत्र में पूंजीवाद, लोकतंत्र, नारी चेतना, अध्यात्मवादी विचारधारा जैसे दर्शनों के प्रोपण हेतु भी शहरी कथा आवश्यक थी।

(५) शहरी क्षेत्र में राजनीति का दोगलापन और मुनाफे की दुनिया को दर्शाने

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

सर्वाधिक प्रबल कारण

(क) प्रेमचंद स्वयं शहर मे बहुत कम समय रहे थे और जब भी रहे निम्न वर्गीय इलाके में रहे थे इसलिये वे शहर के निम्न वर्गों की स्थिति को जानते थे। साथ ही पूंजीवादी व्यवस्था में शोषण, अत्याचार के भी भुक्तभोगी भी थे।

अतः महाकाव्यात्मक उपन्यास में सभी समस्याओं को रेखांकित करने हेतु ही शहरी कथा का समावेशन आवश्यकतानुसार (किया गया है)

(ख) 'यही सच है' कहानी की शिल्प-योजना पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

'यही सच है' कहानी महान लेखिका मन्नू भण्डारी की यथार्थवाद पर आधारित कहानी है जिसमें व्यक्ति के मन में होने वाले परिवर्तन को दर्शाया गया है किस प्रकार वर्तमान युग में नैतिकता का निर्धारण व्यक्ति के चेतन मन पर करना गलत है।

इस कहानी में दीपा का संजय के प्रति प्रेम भविष्य की सुरक्षा, स्थायीत्व के कारण है तो वहीं दूसरी ओर निशिथ के प्रति प्रेम बाहरी आकर्षण, सौन्दर्य और क्षणिक उत्तेजनाओं का परिणाम है।

'यही सच है' कहानी की शिल्प योजना

नई कहानी आंदोलन में शिल्प में बिखराव दिखाई देता है, कथानक का

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

टूटना, आदि-मध्य-अंत का अस्पष्ट होना, भाषा शैली में पूर्वदीप्ति शैली, चेतनाप्रवाह शैली का प्रयोग और प्रतीकों और बिम्बों का अधिक प्रयोग आदि उभर आते हैं।

इसी आधार पर यही सच है कहानी का शिल्प, को मन्नू भण्डारी ने अपने प्रयोगधर्मिता से सुगठित रूप देने का प्रयास किया है।

(1) भाषा शैली

भाषा सीधी-सरल है परन्तु आधुनिक काल की होने कारण अंग्रेजी शब्दों का अधिक प्रयोग है।

उदा० सॉरी, डोंट माइण्ड

सामान्यत: संजय और दीपा के बीच कभी कभी तत्समी शब्दों का प्रयोग।

शैली के स्तर में चेतना प्रवाह शैली, आत्मकथा शैली और डायरी शैली का प्रयोग महत्वपूर्ण है।

दृष्टि The Vision

क्योंकि यह कहानी मूलतः डायरी लेखन पर आधारित है।

(२) चरित्र योजना – पात्रों में मानसिक स्तर पर द्वंद्व दिखाई देता है और इन्हें वास्तविक और स्वाभाविक बनाता है।

(3) कथानक योजना

- कथा में गति, विराम का पूर्ण ध्यान रखा गया है।
- संवाद भी छोटे और चुस्त हैं।
- कथावस्तु, वर्तमान की समस्या आधारित होने के कारण विश्वसनीय है।

(4) प्रतीकों और बिम्बों का प्रयोग नाटकीयता बढ़ाता है।

(5) कहीं-कहीं मुहावरों का प्रयोग भी सुंदर है।

इस प्रकार यही सच है कहानी संवेदना और शिल्प दोनों ही स्तर पर एक सफल कहानी है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(ग) क्या 'दिव्या' उपन्यास में यशपाल मार्क्सवादी विचारधारा को प्रक्षेपित करने में सफल हुए हैं? तार्किक उत्तर दीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

यशपाल, प्रगतिवादी विचारधारा के महान साहित्यकार है। इन पर मार्क्सवाद का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। उनकी रचनायें जैसे - पार्टी कामरेड, दादा कॉमरेड, देशद्रोही आदि वर्ग संघर्ष, शोषण प्रति विरोध आदि विचारों को समाहित करती है।

दिव्या पर मार्क्सवादी विचारधारा का प्रभाव

दिव्या पर यशपाल ने मार्क्सवादी विचारों का स्थूल प्रक्षेपण के स्थान पर सूक्ष्म प्रक्षेपण किया है साथ ही उन्होंने मार्क्सवादी विचारधारा का अतिक्रमण भी किया है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

① मार्क्सवाद भौतिकवादी दर्शन है जो ईश्वर, परलोक, पुनर्जन्म और अलौकिक मान्यताओं पर विश्वास नहीं करता है। भारीश के माध्यम से इन विचारों को व्यक्त किया है।

" देवि मनुष्य भोक्ता नहीं सृष्टा है वह अपनी परिस्थितियों का निर्माण स्वयं करता है।

② मार्क्सवाद समतामूलक समाज की स्थापना पर विश्वास करता है। विषमता का विरोध करता है क्योंकि ये विषमताएं अन्याय को जन्म देती है

" स्वामिनी का आदेश था पहले स्वामिनी के पुत्र का स्तनपान किया जायेगा फिर दिव्या अपने पुत्र को स्तन्य देगी।'

" पाते अठारह माह में पुत्र को जन्म देने में इतनी अभ्यस्त हो गयी थी कि अब इन्हें शिशु वियोग का दुःख नहीं होता था।

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

③ मार्क्सवाद मानता है राज्य वर्ग ही विभेद को संरक्षण देते हैं। अत: शासन में स्थापित वर्ग ही शक्ति का प्रयोग शोषण के लिये करता है।

④ मार्क्सवाद विवाह व्यवस्था को भी विषमतामूलक मानता है जिसमें नारी को वंश का उत्तराधिकार जन्म देने वाली वस्तु माना जाता है।

स्कन्धीर - तुम्हारा जन्म नृत्तिका बनने नहीं हुआ है अपितु कुलकन्या का जन्म कुलमाता, कुलवधू बनने होता है।

⑤ मार्क्सवाद साधारण जनता की शक्ति पर विश्वास करता है। दिव्या में भी आक्रमण के समय जनशक्ति को आधार बनाने की बात।

परन्तु वहीं दूसरी ओर पृथुसेन द्वारा दासों का शोषण, रुद्रधर्मा जैसे उच्च वर्ग द्वारा छाया (दासी) की मृत्यु पर अपराधबोध मार्क्सवाद का अतिक्रमण करता है।

7. (क) आंचलिक होते हुए भी मैला आँचल अपनी आंचलिकता का अतिक्रमण करता है और राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य का साक्षात्कार करता है। आप इस मत से कहाँ तक सहमत हैं? 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

मैला आँचल महान आंचलिक उपन्यासकार फणीश्वरनाथ रेणु का महान आंचलिक उपन्यास है जिसने आंचलिक उपन्यासों की रचना हेतु कसौटी और आधार प्रदान किया है।

वस्तुतः आंचलिक उपन्यास की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता होती है कि वह भौगोलिक सीमा के भीतर की सम्पन्न समस्याओं और विशेषताओं को वास्तविकता के साथ प्रस्तुत करता है।

परन्तु कुछ सक्षम उपन्यासकार इनका अतिक्रमण कर आंचलिक उपन्यास को भौगोलिक सीमा तक न बांधकर का राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य का साक्षात्कार करते हैं।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

मैला आँचल के प्राक्कथन में
ही रेणु ने घोषणा की है कि -

यह है मैला आँचल एक आँचालिक। पूर्णियाँ
उपन्यास है ~~मैंने~~ इसके छोर से गिरने के
गाँव को, पिछड़े गाँवों का प्रतीक मानकर
इस उपन्यास का कथाक्षेत्र बनाया है।

अतः मैला आँचल का पूर्णिया का
मेरीगंज गाँव, सम्पूर्ण देश के पिछड़े
गाँवों की समस्याओं का चित्रण करता
है जो इसे राष्ट्रीयता के स्तर पर पहुँचाता
है।

राष्ट्रीयता के परिप्रेक्ष्य के उदाहरण

(1) इसमें जो समस्याएँ हैं सम्पूर्ण देश के
पिछड़े गाँवों की समस्याएँ हैं।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उदाहरण -

- सामाजिक समस्याएँ जैसे - जातिगत भेदभाव, गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी, शोषण ये सभी समस्याएँ सभी पिछड़े देशों में आज भी विद्यमान है।

- नारी को आर्थिक महत्व न देना, पितृसत्तात्मकता, वस्तु मानना आदि आज भी समस्या के रूप में है।

जोरू, जमीन, जोर का नहीं तो किसी और का।

- राजनीतिक स्तर पर दलों के बीच वैचारिक संघर्ष आज भी विद्यमान है।

सारा गाँव तीन दलों में बंटा हुआ था, ब्राह्मण, यादव, रस्ट।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

इस प्रकार यदि गोदान से तुलना की जाये तो जहाँ गोदान ने ऐतिहासिक तिथि का जानकारी न देकर इसे एक राष्ट्रीय महाकाव्यात्मक उपन्यास बनाने का प्रयास किया है।

वहीं दूसरी ओर रेणु ने आंचलिकता के मध्य से राष्ट्रीयता को स्थापित करने का प्रयास किया है।

अतः गोदान राष्ट्रीयता का मैक्रोस्कोपिक वर्णन है वहीं मैला आँचल राष्ट्रीयता का माइक्रोस्कोपिक रूप है।

(ख) 'बूढ़ी काकी' कहानी वृद्धावस्था का मार्मिक अंकन करती है। इस कथन के परिप्रेक्ष्य में 'बूढ़ी काकी' की संवेदना पर प्रकाश डालिए। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

बूढ़ी काकी कहानी मुंशी प्रेमचंद की वृद्धावस्था की समस्याओं पर आधारित महान कहानी है जो वर्तमान मे भी वृद्धो के साथ होने वाले अलगाव, भेदभाव के कारण प्रासंगिकता धारण करती है।

संवेदना

(1) बूढ़ी काकी मे उसका भतीजा और बहु आर्थिकरूप से बूढ़ी काकी की सम्पत्ति के कारण ही शक्तिशाली बने परन्तु अब उन्हे आर्थिक बोझ मानते है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(२) बूढ़ी काकी की भोजन के प्रति संवेदना चरम स्तर पर है या स्वाद चखने की इच्छा उन्हें शर्मिंदा कर देती है।

बुढ़ापा बहुधा, बचपन का पुनरागमन होता है।

(३) वृद्ध को दो वक्त के खाने के लिये दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है। जो उन्हें और कमजोर बनाता है।

(४) वृद्धों के पास सामाजिक सुरक्षा जैसे- पेंशन, बीमा की कमी उन्हें दूसरों पर निर्भर बना देती है।

(5) भूख लगने पर बूढ़ी काकी का जूठे पत्तल चाटना, संवेदना के स्तर पर

मार्मिक चित्रण करता है।

(6) सामान्यतः घर के छोटे बच्चे वृद्ध सदस्यों के प्रति संवेदनशील दिखाई देते हैं।

उदा० लाडली का बूढ़ी काकी के प्रति प्रेम

(7) अंत में लाडली की माँ का हृदय परिवर्तन हो जाता है और उसका बूढ़ी काकी को भोजन कराना आदर्शवाद का प्रस्तुपण है।

यही समस्या चीफ की दावत (भीष्म साहनी) में भी उपस्थित है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(ग) 'धनिया प्रेमचंद की सर्जनात्मक आँख है।' इस कथन के परिप्रेक्ष्य में धनिया का चरित्र-चित्रण कीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

गोदान उपन्यास मे प्रेमचंद ने सामान्यतः ग्रामीण चरित्रों का समावेशन किया है। तथा उनके सामाजिक यथार्थ को दर्शाने का प्रयास किया है।

धनिया का चरित्र गोदान का सबसे सर्जनात्मक चरित्र है जो शोषण के प्रति आवाज उठाती है, नए विचारो के अनुसार परिवर्तनशील चरित्र का नेतृत्व करती है।

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

धनिया का चरित्र चित्रण

(1) होरी के प्रति एकनिष्ठता और प्रतिबद्धता।

सोहाग ही एक सहारा था जिसके आधार पर धनिया जीवन जी रही थी।

(2) धनिया द्वारा झुनिया को घर में रहने देना उसके उदारवादी चरित्र को दर्शाता है।

जिस प्रकार धनिया जातिवाद, अंतर्जातीय विवाह आदि विचारों पर उदारवान है।

(3) धनिया द्वारा शोषण के विरुद्ध आवाज उठाया जाना भी, नारी चेतना को दर्शाता है।

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उदा॰ पुलिसवालों और पंचायत द्वारा होरी पर मनमाना दण्ड आरोपित करने पर

(5) धनिया सहिष्णु और समझौतावादी चरित्र है जो अपनी परिस्थितियों से घबराती नहीं अपितु साहस के साथ लड़ती है।

इस प्रकार गोदान में धनिया का चरित्र, नारी चेतना का मुखरता से चित्रित करता है।

8. (क) क्या 'भारत-दुर्दशा' को 'त्रासदी' माना जा सकता है? अपना मत प्रकट कीजिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ख) शिल्प की दृष्टि से 'कुटज' निबंध का विवेचन कीजिए। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ग) ''महाभोज' उपन्यास के 'दा साहब' का चरित्र-चित्रण कीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)